Sociology

1 B-I(H) Paper – II 1

Critically discuss the theory of Social change propounded by marx.

कार्ल मार्क्स के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत का वर्णन करें? or

Critically analyse any one conflict theory of social change.

सामाजिक परिवर्तन की समस्या का अध्ययन समाजशास्त्रीय अध्ययन की एक मुख्य विषय वस्तु है। 19 वीं शताब्दी और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ के प्रायः सभी समाजशास्त्रियों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। किंतु यह प्रश्न आज भी एक विवाद का प्रश्न बना हुआ है कि सामाजिक परिवर्तन क्यों होता है? और सामाजिक परिवर्तन स्थिति उत्पन्न करने में किन-किन कारणों का योगदान है? इसी तरह यह प्रश्न भी प्रारंभिक काल से ही एक विवाद का प्रसंग बना हुआ है कि परिवर्तन किस प्रक्रिया के द्वारा होता है। कुछ लोगों ने सामाजिक परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न करने में उद्विकास की प्रक्रिया के महत्व को स्वीकार किया है। इसके विपरीत कुछ समाजशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन में चक्रिय प्रक्रिया (cyclic process) के महत्व को स्वीकार किया है। इसी तरह कुछ सामाजिक विचारकों ने सामाजिक परिवर्तन में संघर्ष की प्रक्रिया के महत्व को दर्शाया है और सामाजिक परिवर्तन के संघर्ष सिद्धांत (conflict theory of Social change) का प्रतिपादन किया है। वर्तमान प्रश्न मार्क्स (marx) से सम्बन्धित सिद्धांत की विवेचना से सम्बन्धित है। अतः marx (मार्क्स) ने दो विरोधी वस्तुओं में आंतरिक प्रतिरोध को आधार पर सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। इसलिए इसके सिद्धांत को संघर्ष सिद्धांत के अन्तर्गत रखा गया है। यहाँ यह वर्णन करना अप्रासंगिक नहीं प्रतीत होता है कि मार्क्स ने 'सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत' नाम से कोई सिद्धांत प्रस्तुत किया था। उन्होंने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, (Dialectical materialism) ऐतिहासिक भौतिकवाद, (Historical materialism) आर्थिक निश्चयवाद, (Economic determinism) वर्ग संघर्ष इत्यादि सिद्धांतों में सामाजिक परिवर्तन की चर्चा की है। उसी के आधार पर मार्क्स के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत के विवेचना की जाती है। मार्क्स ने द्वन्द्ववाद के सिद्धांत के आधार पर सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत की व्याख्या प्रस्तुत किया। इनका द्वन्दवाद से सम्बन्धित विचार Hegel के विचारों से प्रभावित है। किंतु इन्होंने Hegel के सिद्धांत को स्वीकार किया।

Scanned with CamScanner

उनकी आध्यात्मिक व्याख्या को स्वीकार नहीं किया। इनके अनुसार संसार की हर वस्तु या घटना में आंतरिक विरोध पाया जाता है एवं इस आंतरिक प्रतिरोध के कारण परिवर्तन स्वतः होता है, अर्थात् मार्क्स ने कहा है कि समाज अपरिवर्तनशील नहीं है, बल्कि सदा परिवर्तनशील है, किंतु यह परिवर्तन विचारों में द्वन्द्व के कारण नहीं होता है बल्कि भौतिक जीवन में परिवर्तन के कारण होता है। ये भी Hegel के समान सामाजिक परिवर्तन में वाद (Thesis), प्रतिवाद (Antythesis) और संवाद (Synthesis) इन तीन स्तरों के महत्व को स्वीकार किया है। किंतु इन तीन स्तरों का नाम Marx ने क्रमशः स्वीकृत (Affirmation), निषेध (Negation) तथा पुनर सामंजस्य (Reconciliation) दिया। इनके अनुसार छोटे से छोटे गुणात्मक परिवर्तन (Qualitative change) के कारण बड़ा से बड़ा गणनात्मक परिवर्तन भी संभव है। परिवर्तन की दर मंद ही नहीं बल्की तीव्र भी हो सकती है। तीव्र गति से होने वाले परिवर्तन को ही मार्क्स ने क्रांति की स्थिति कहा है। इन्होंने अपने सिद्धांत में आर्थिक कारकों को बहुत महत्व दिया है। आर्थिक कारकों के सम्बन्ध में मार्क्स ने लिखा है "भौतिक जीवन में उत्पादन का प्रकार सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक जीवन की प्रक्रियाओं की सामान्य प्रकृति को निश्चित करता है।" (The mode of Production in material life determines the general character of the Social, Political spiritual Process of Life.) इसका मतलब कि Marx ने आर्थिक कारकों को सामाजिक परिवर्तन का मुख्य निर्णायक कारक माना। किंतु इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने सामाजिक परिवर्तन में अन्य कारकों के योगदान को पूर्णतः अस्वीकार किया। इन्होंने यह भी बताया है कि सामाजिक परिवर्तन उत्पादन की प्रणाली पर आधारित है और उत्पादन की प्रणाली प्रौद्योगिकी को मार्क्स ने समाज की धुरी कहा और बताया कि प्रौद्योगिकी में परिवर्तन के कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक परिवर्तन होता है। अर्थात् इन्होंने सामाजिक परिवर्तन में उत्पादन की प्रणाली तथा प्रौद्योगिकी के महत्व को दर्शाया है। मार्क्स ने सामाजिक ढाँचे के निर्माण में उत्पादन के प्रणाली की भूमिका को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हुए लिखा है" जब हाथ की चक्की थी तब सामंतवादी समाज था, भाप से चलने वाली चक्की वह समाज बनाती है जिससे प्रमुख औद्योगिक पूंजीपति का होता है।"

Scanned with CamScanner

(The handmill given you Society with feudal lord, the Steam-mill, Society with the Industrial Capitalist.)

मार्क्स के अनुसार उत्पादन की प्रणाली में परिवर्तन के कारण उत्पादन की शक्तियों में परिवर्तन होता है और उत्पादन की शक्तियों में परिवर्तन के कारण सामाजिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन होता है। सामाजिक परिवर्तन अर्थात् सम्बन्धों में होने वाला परिवर्तन को ही मार्क्स ने सामाजिक परिवर्तन कहा है। मार्क्स के शब्दों में "सामाजिक सम्बन्धों का उत्पादन की शक्तियों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। उत्पादन की नई शक्ति को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति पहले उत्पादन के तरीकों में परिवर्तन करते हैं, इस प्रकार उत्पादन के तरीकों और आजीविका कमाने के तरीके में परिवर्तन होने से उनके सामाजिक सम्बन्ध भी परिवर्तित हो जाते हैं।" (Social relations are closely bound up with productive forces, on acquiring new productive forces men change their mode of production & in changing the way of earning their living they change all their social relations)

मार्क्स ने अपने वर्ग संघर्ष के सिद्धांत में दर्शाया है कि अब पूँजीपतियों का शोषण श्रमिकों के लिए असहनीय हो जायेगा तब श्रमिक क्रांति के द्वारा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना करेगा। इन्होंने अपने सिद्धांत में बताया है कि उत्पादन की प्रणाली ही वर्गों की प्रकृति को निश्चित करती है। जब उत्पादन की प्रणाली में परिवर्तन होता है, तब नवीन वर्गों का जन्म होता है। इस वर्ग में एक पूँजी वर्ग होता है तथा दूसरा श्रमिक वर्ग। पूँजी वर्ग के अधिकारी श्रमिकों का शोषण करता है। इसे ही इन्होंने मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण कहा है। इन्होंने यह भी कहा है कि मानव समाज के इतिहास में प्रत्येक चरण में विभिन्न वर्गों का अस्तित्व रहा है। क्योंकि प्रत्येक युग में वर्ग संघर्ष की स्थिति विद्यमान रही है। मार्क्स ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि पूँजीवादी युग में श्रमिकों तथा पूँजीपतियों के बीच संघर्ष, वर्ग संघर्ष का अन्तिम रूप होगा। इस युग के बाद सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना होगी और एक वर्ग विहीन समाज उत्पन्न होगा और सामाजिक व्यवस्था, समाजवादी व्यवस्था या साम्यवादी व्यवस्था के नाम से विभूषित होगी। इस समाजवादी व्यवस्था के अनुरूप प्रत्येक व्यक्ति को उसकी अपनी

Scanned with CamScanner

A

योग्यता और सामर्थ्यता के अनुसार कार्य करना होगा। समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रिय धन का कुछ भाग उत्पादन के साधनों के अधिक विस्तार, सामान्य प्रशासन सम्बन्धी खर्चे, प्राकृतिक संकटों से रक्षा, सामाजिक कल्याण और सुरक्षा के लिए अलग रख दिया जायेगा और शेष भाग श्रमिकों को वेतन के रूप में दिया जाएगा।

आलोचना —

मार्क्स (Marx) के सिद्धांत कुछ रूपों में दोषपूर्ण प्रतीत होता है जो निम्न हैं :-

(1) मार्क्स ने आर्थिक कारकों को ही सामाजिक परिवर्तन का निर्णायक कारक मानने की भूल की है। मार्क्स के अनुसार With the change of the economic foundation the entire immence super structure is more or less rapidly transformed. (आर्थिक आधार पर परिवर्तन के साथ सम्पूर्ण विशाल अधिसंरचना तीव्र या मध्यम गति से परिवर्तित हो जाती है।) सामाजिक परिवर्तन की यह व्याख्या मान्य नहीं है। सामाजिक परिवर्तन एक जटिल समस्या है, और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बहुत कारक सामाजिक परिवर्तन में योगदान देते हैं। Gillin & Gillin की पुस्तक 'Cultural Sociology' में इस बात का उल्लेख किया गया है कि सामाजिक परिवर्तन में जनसंख्या के रूप, भौगोलिक दशाएँ, सांस्कृतिक उपकरण, आविष्कार विचार इत्यादि विभिन्न कारकों का योगदान होता है। अतः केवल एक कारक के आधार पर सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करने का विचार उचित नहीं प्रतीत होता है।

(2) प्रौद्योगिकी में परिवर्तन होने के कारण उत्पादन की प्रणाली में परिवर्तन होता है एवं उत्पादन की प्रणाली में होने वाला परिवर्तन सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक जीवन की प्रक्रियाओं की सामान्य प्रकृति को निश्चित करता है। प्रश्न उठता है कि प्रौद्योगिकी में परिवर्तन कैसे और कहाँ से होता है। मार्क्स (Marx) इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर देने में असमर्थ सिद्ध होते हैं। फलस्वरूप उनका सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत व्यावहारिक होने की अपेक्षा रहस्यमय होगया।

(3) मार्क्स के अनुसार अभी तक के सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। अर्थात् इन्होंने सामाजिक परिवर्तन में संघर्ष के तत्व का विशेष महत्व दिया है। मार्क्स का यह विचार उचित नहीं

Scanned with CamScanner

प्रतीत है क्योंकी सामाजिक जीवन में सहयोगी प्रक्रियाओं या सहयोग के तत्व के महत्व को कभी अस्वीकार नही किया जा सकता है। क्रोपोटकीन ने भी पारस्परिक सहायता की भावना सम्बन्धी अन्वेषण में यह सिद्ध किया है कि विभिन्न वर्गों में प्रतिरोध की अपेक्षा सहयोग की भावना अधिक मात्रा में पायी जाती है। अतः इस रूप में भी मार्क्स का सामाजिक परिवर्तन सम्बन्धी विचार दोषपूर्ण प्रतीत होता है।

(4) मार्क्स अनेक शब्दों जैसे आर्थिक कारक (Economic factor), उत्पादन की शक्तियों (Forces of Production) एवं आर्थिक आधार (Economic Basis) इत्यादि को स्पष्ट रूप से परिभाषित नही किया है। फलस्वरूप उनका सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत भ्रमपूर्ण स्थिति उत्पन्न करता है।

(5) मार्क्स ने कहा है कि उत्पादन की प्रविधियों में होने वाला परिवर्तन समाज की आर्थिक संरचना को निश्चित करता है जो बाद में समाज के राजनैतिक, सामाजिक और बौद्धिक जीवन को निश्चित करता है। दूसरी और इन्होने आर्थिक कारक की व्याख्या करते हुए बताया है कि उत्पादन और विनमय की सामान्य दशाओं के होने वाला परिवर्तन एक समाज की वर्ग रचना (Class Composition) को निश्चित करता है जिसका प्रभाव बाद में वर्ग प्रतिरोधों के नये रूप पर पड़ता है और फलस्वरूप समाज के सामाजिक, राजनीतिक तथा बौद्धिक ~~आधारों~~ आद्य संरचना (Super Structure) में परिवर्तन होता है। ये दोनो कथन एक-दुसरे के विरोधी विचार धारा को स्पष्ट करते है।

(6) मार्क्स के अनुसार प्रौद्योगिकी उसी के अनुरूप समान आर्थिक व्यवस्था को जन्म देती है। इसका अर्थ यह है कि विभिन्न स्तर के Technology वाले समाज में भिन्न-भिन्न अर्थव्यवस्था पाई जानी चाहिए। किंतु वास्तविक तथ्य इसके विपरीत पाए जाते है। विभिन्न स्तर के प्रौद्योगिकी वाले समाजों में भी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था देखने को मिलती है। इसी तरह विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं में भी एक ही प्रौद्योगिकी पायी जाती है। अतः मार्क्स का कथन कि एक प्रकार की प्रौद्योगिकी उसी के अनुरूप समान आर्थिक व्यवस्था को जन्म देती है, उचित नही प्रतीत होता है।

S. N. Choudhary
L. N. M. U

Scanned with CamScanner